धर्मलोपभयाद्राज्ञीमृतुस्नातामिमां स्मरन् ।

प्रदक्षिणीक्रियार्हायां तस्यां त्वं साधु नाचर ।।76।।

अन्वय ऋतुस्नाताम् इमां राज्ञीं धर्मलोपभयात् स्मरन् प्रदक्षिणिक्रियार्हायां तस्यां (धेनौ) त्वं साधु नाचर।

अनुवाद (ऋतुकाल में अभिगमन न होने से कहीं) धर्म का लोप (व्याघात) न हो जाए इस भय से ऋतुस्नान की हुई इस रानी (सुदक्षिणा) का ही केवल ध्यान करते हुए तुमने प्रदक्षिणा के द्वारा सत्कार करने योग्य (मार्ग में बैठी) कामधेनु का उचित सत्कार नहीं किया।

टिप्पणियाँ

धर्मलोपभयात् धर्मस्य लोपः धर्मलोपः, धर्मलोपात् भयम् इति धर्मलोपभयम्, तस्मात्। धर्म (कर्त्तव्य) की उपेक्षा के भय से। अकरणे प्रत्यवायः।

विशेष पत्नी का यह वैवाहिक अधिकार है कि उसके ऋतु स्नान कर लेने के पश्चात् उसका पति सहवास के लिए उसके पास जाए। अतएव राजा दिलीप पृथ्वी पर लौटने के लिए अत्यन्त उत्सुक था क्योंकि वह ऋतुस्नान कर चुकी सुदक्षिणा के प्रति पति के रूप में अपना कर्त्तव्य पूरा न कर दोषी नहीं बनना चाहता था। अतएव यात्रा करते समय सुदक्षिणा के प्रति अपने कर्त्तव्य को स्मरण करते हुए उसने मार्ग में उपस्थित कामधेनु की ओर ध्यान नहीं दिया। इस प्रकार अनवधानता के कारण उसके द्वारा पूज्या कामधेनु

का अपमान हो गया। शास्त्र में ऋतुकाल के तुरन्त बाद में पत्नी से अभिगमन न करना पति के लिए बड़ा दोष माना जाता है। देखिए,

'ऋतुस्नातां तु यो भार्यां स्वस्थः सन्नोपगच्छति।

बालगोध्नापराधेन विद्यते नात्र संशयः।।' .पराशर

ऋतुस्नाताम् ऋतुना स्नाताम् इति। ऋतुस्नाताम् रजोदर्शनादूर्ध्वं चतुर्थे दिने स्नात्वा पतिसमागमं अपेक्षमाणाम्। (महारानी सुदक्षिणा) जिसने रज का प्रस्रवण होने के पश्चात् शुद्धि का स्नान कर लिया है।

प्रदक्षिणा प्रगतं दक्षिणं इति प्रदक्षिणं (प्रादिसमास), प्रदक्षिणस्य क्रिया इति प्रदक्षिणीक्रिया, प्रदक्षिणाक्रियायाः अर्हा तस्याः। कामधेनु का विशेषण। यह कामधेनु जो प्रदक्षिणा (आदर प्रदर्शन के लिए देवमूर्त्ति या पूज्यजनों के चारों ओर परिक्रमा करना) रूप सत्कार करने योग्य थी।

नाचरः न आ धातु चर् लङ् मध्यम पुरुष, एकवचन (तुमने उसका प्रदक्षिणादि से सम्मान) नहीं किया।